Prakash College

Name : ARNAAZ SHAIKH

Class / Div : FYJC-E Roll No.: 20

Article Title : Family Relationship. Why is Important

A strong family is all that you need to fight all odds in life. No matter how the day has been for you, no matter how people must have behaved with you, and no matter the problems have been facing, the smiling face of your spouse and children help you stay balanced.

But that trust and support do not come easily. They are built over the years with careful nurturing.

A family constitutes people who are related to each other and share an Emotional bond and similar values. Family members can be related by birth, marriage, or adoption. Your immediate family includes parents, siblings, spouse and children. And your Extended family includes people you are related to, such as grand-Father, cousins, aunts & uncles, nephews, nieces, Etc.

Families are of different sizes - nuclear (a couple and their children), joint (a couple, their children, grandchildren), blended (a couple, their children, and children from their previous marriages), Etc.

A family is important because our mental growth, well-being, and stability all depend on our family.

Name : Arnaaz Shaikh

Class / Div : FYSC - E Roll No.: 20

Prakash College

Article Title : Family Relationship - Why is it important

- A family makes all its members feel safe and connected to one another.
- It provides us with the comfort of having people by our side during tough times, helping us to manage our stress.
- A family allows us to feel safe, protected, accepted and loved despite our shortcomings.
- Families are the basic units that teach children about relationships. Children brought up in a healthy family will be able to form better bonds outside their home.
- Stronge relationships tech us how to build trust in others as family members share both good and bad times together.
- Conflicts in family teach children a respectful way to resolve problems in the future.
- A strong family is all a person needs to become confident in life.

Prakash College

Name : Priyanka Mistri

Class / Div : A / F.Y.J.C Roll No.: 26

Article Title : भारतीय कृषि भविष्य की चुनौतियाँ

भारतीय कृषि के सामने जो चुनौतियाँ हैं, उनका गहराई से विश्लेषण करते हुए लेखक का कहना है, कि उनका सामना समोकित नीति, कार्यक्रम से ही किया जा सकता है, किसी एक या दो पहलुओं पर ही जोर देने से लक्ष्य की पूर्ति अधूरी रह सकती है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार रहा है और अब भी है। इसे सिर्फ सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र के योगदान के रूप में ही नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि कृषि पर बड़ी संख्या में लोगों की निर्भरता और औद्योगिकीकरण में कृषि क्षेत्र की भूमिका के रूप में भी देखा जाना चाहिए। देश में कई महत्वपूर्ण उद्योग कृषि उत्पाद (उपज) पर निर्भर हैं जैसे कि वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग या फिर लघु व ग्रामीण उद्योग, जिनके अंतर्गत तेल मिलें, दाल मिलें, आटा मिलें और बेकरी आदि आते हैं।

आजादी के बाद से भारतीय कृषि ने काफी बढ़िया काम किया है। वर्ष 1950-51 में खाद्य उत्पादन 5.083 करोड़ टन था जो 1990-91 में बढ़कर 17.6 करोड़ टन होगया। इस प्रकार खाद्य उत्पादन में लगभग 350 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। परिणामस्वरूप, जनसंख्या में भारी वृद्धि होने के बावजूद अनेक कृषि जिन्सों की प्रति व्यक्ति उपलब्धता में सुधार आया है।

विकास प्रक्रिया की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इस बात का प्रमाण हमें इस तरह से पता चलता है, कि हाल के वर्षों में सूखे वाले वर्ष में खाद्य उत्पादन वाले वर्ष में के खाद्य का अंतर, पचास और साठ के दशकों की तुलना में कम है।

Name : _____

Class / Div : _____ Roll No.: _____

Prakash College

Article Title :

अब हमें कुपोषण या अल्प-पोषण की वजह से अकाल व महामारी जैसी स्थितियों का सामना नहीं करना पड़ता है, जैसा कि सदी के आरम्भिक दौर में करना पड़ता था,

मुख्य रूप से सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के बदौलत यह स्थिति आई है, इस समय कुल बुआई क्षेत्र के 32 प्रतिशत हिस्से में सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध है, कृषि विकास के प्रक्रिया में बड़ी संख्या में किसानों द्वारा आधुनिय तौर तरीके अपनाया जाना और सरकारी निजी व सहकारी क्षेत्रों में किसानों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए संस्थानों के जाल बिछाने से भी मदद मिली है,

चुनौतियाँ :-

फिर भी, भारतीय कृषि के सामने न सिर्फ अपने मामले में बल्कि समग्र आर्थिक स्थिति के एक हिस्से के रूप में भी अनेक बड़ी चुनौतियाँ है, यहाँ इस बात को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था, के अन्य क्षेत्रों से महत्वपूर्ण रूप से जुड़ी हुई है।

Name : Narkar Yash Kamlesh.

Class / Div : B Roll No.: 11

Prakash College

Article Title : 'माणूस' बांधूया

आजचे युग हे विज्ञानयुग समजले जाते. मानव प्रगती पथावर वाटचाल करीत चंद्रावर जाऊन पोहोचला पण साधलेकी तो दुसऱ्या मानवी मनापर्यंत पोहोचला आहे का? हीच लेखकाची खंत आहे. इंटरनेट, व्हॉट्स अॅपने जग जवळ आले असे आपण म्हणतो परंतु हृदय हृदयाशी जोडले गेले का? असा प्रश्न लेखकाला त्रस्त करतो आणि म्हणून केवळ यंत्रवत जीवन जगण्यापेक्षा हृदयाने हृदय बांधले जाणे आवश्यक असल्याचे लेखकाला वाटते. यासाठी मनाचा मनाशी संवाद होऊन माणूस माणसाशी बांधला जाणे, जोडला जाणे महत्त्वाचे आहे हेच लेखक पाठातून सांगू इच्छितात.

आधुनिक काळात पैशाला अवास्तव महत्त्व देऊन त्यातूनच सुखाची प्राप्ती होते असे मानले गेले. प्रेम, वात्सल्य बाजूला करून पैसाच बोलू लागला. यांतूनच जग स्वार्थी बनले. पैशाच्या मोहात अडकलेला माणूस माणूसपण हरवून बसला आणि स्वतःच्याच घरात राहणाऱ्या माणसांसाठी अनोळखी ठरला. माणसा-माणसांतील अंतर वयाने नाहीतर पैशामुळे वाढत गेले व प्रत्येक जण एकमेकांना कधीतरी भेटू याच आशेवर जगू लागला. आत्म्याची आत्म्याला दिलेली साद म्हणजे संवाद हेच माणूस विसरला. एकमेकांसाठी वेळच कोणाकडे शिल्लक राहिला नाही. आजी आजोबा, आई-वडील - मुले ही नाती दुरावली गेली. प्रत्येकजण आपल्या जगात मग्न झाला. मौज-मजा, पंगत यातच 'जगणे' आहे, अशी वृत्ती बळावली आणि माणसं एकमेकांपासून दूर गेली.

Prakash College

Name : _____

Class / Div : _____ Roll No.: _____

Article Title :

ई-मेल, चॅटिंग, हे मार्ग संवाद साधण्यासाठी निवडले गेले. यंत्राच्या मदतीने हृदये मात्र जोडला आली नाहीत. दिवसभर पैशासाठी जीवन प्रवास करणारी माणसं, मानवी सहवासाच्या खऱ्या सुखापासून वंचित राहिली. एकाकीपण वाढत गेले. परंतु जसजसे एकाकीपण वाढत गेले, निराशा येत गेली तसतशी परत एकदा संवादाची आवश्यता भासू लागली. कारण मानवाला नवनिर्मितीची प्रेरणा देणारे मन पैशाच्या मागे धावू लागले. नव्या युगाची जीवनशैली माणूसपणाशी नाते जोडू शकली नाही. अशावेळी लेखकाच्या मते केशव-सुतांच्या काव्य रचनेने सत्त्वाचा केलेला जयजयकार लक्षात घेतला पाहिजे. केवळ मर्ती. विटांच्या इमारती बांधण्यापेक्षा अंत: करणातील प्रेमाने माणूस माणसांशी बांधला जावा हेच लेखक यातून सांगू इच्छितात.